क्षमा का अन्तर्दर्शन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

क्षमा भारतीय संस्कृति का बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है। क्षमा का अर्थ है माफ करना। क्षमा वीरस्य भूषण अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण है। शक्ति सम्पन्न व्यक्ति ही क्षमा कर सकता है। आगमों में कहा गया है कि ये कम्मे शूरा ते धम्मे शूरा अर्थात– जो कर्म शूरवीर होते हैं वे धर्म शूरवीर होते हैं। जिसका हृदय निश्चल, निष्कपट और संवेदनशील होता हे वही क्षमादान दे सकता है। भारत देश क्षमादान करने वाला देश है। अनेक आक्रमणकारी समय–समय पर आक्रमण किये किन्तु यहां के शासकों ने उन्हें क्षमादान देकर विशाल सहृदयता का परिचय दिया। यद्यपि हमारे क्षमादान का आक्रमणकारियों ने अनुचित लाभ उठाया। भारतीय भावना क्षमादान से ओतप्रोत है। अपना नुकसान करके भी हमने दूसरों को क्षमा किया है। क्षमाशीलता के कारण ही विदेशी आक्रान्ता भारतीय संस्कृति में समा गये। शक, हूण, कूषाण, मंगोल और यवनों ने यद्यपि यहां आकर बर्बरता दिखलाई किन्तु भारतीय संस्कृति ने उनका भी सम्मान किया। क्षमा भावना ही सबको एकसूत्र में पिरोये हुए है। यह स्नेह का बंधन है। क्षमाशील व्यक्ति का हृदय विशाल होता है। वीर का आभूषण तलवार, कटारी, तोप या अस्त्र–शस्त्र तो हैं ही साथ ही साथ क्षमा भी उसका एक बहुत बड़ा शस्त्र है। ऐसा वीर जो बाहरी शत्रुओं से लड़ता हैं उसके पास तीर कमान तलवार और आधुनिक अस्त्र–शस्त्र आवश्यक है। देश की सीमा पर रहने वाले सैनिक वीर हैं, उनके पास आधुनिक अस्त्र–शस्त्र इसलिए रहते हैं, क्योंकि वे देश की सीमा की रक्षा करते हैं। लेकिन मनुष्य के अन्दर जो आन्तरिक शत्रु बैठे हुए हैं उनको नष्ट करने वाला महावीर कहलाता है। इस जीवन में दो प्रकार के अन्धकार हैं। एक अन्धकार तो सूर्य के प्रकाश से नष्ट हो जाता है। किन्तु दूसरा अन्धकार जो मानव के अन्तःकरण में स्थित है, उसे सैंकड़ों सूर्य का प्रकाश भी दूर नहीं कर सकता। वह इतना गहन हैं कि जब तक वह अन्दर विराजमान रहता हैं मानव को किसी चीज का ज्ञान ही नहीं हो सकता। उस अन्धकार को दूर करने वाला सबसे बड़ा वीर है। वह अन्धकार हैं काम, क्रोध,

मद, लोभ। इन चारों का एक ऐसा जोड़ा हैं जिसको दूर करने के लिए आत्मबल की आवश्यकता होती है।

आत्मबल एक ऐसी शक्ति हैं जो हृदय के अंधकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश करती है। ऐसा ही मनुष्य महामानव कहलाता है। ऐसे व्यक्ति का अस्त्र क्षमा है। महात्मा गांधी ने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए प्रायश्चित्, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, सत्य, अहिंसा और क्षमा का मार्ग चुना। यह ऐसा मार्ग हैं जो शत्रु के हृदय को परिवर्तित कर देता है। महान् वही होता हैं जो क्षमाशील हो, जिसमें विनम्रता हो, करुणा हो दया हो और दूसरों को अपने साथ ले चलने की शक्ति हो। क्षमा एक ऐसा धर्म हैं जो शत्रुता को शत्रुता से नहीं बल्कि प्रेम से जीतता है। भगवान् महावीर जब त्रिशला मां के गर्भ में आये तो तीन ज्ञान मति, श्रुति और अवधिज्ञान उनमें पहले से ही विद्यमान था। जन्म के बाद उनकी प्रकृति ही कुछ ऐसी थी, जो साधारण बालकों में नहीं होती। राजपुत्र होते हुए भी सभी प्रकार के वैभवों को त्यागकर मानवता के कल्याण के लिए उन्होंने अपने जीवन में अहिंसा के मार्ग को चुना और घोर तपस्या करके विश्व को सत्य का दर्शन दिया। वह दर्शन था, जियो और जीने दो। क्षमाशील व्यक्ति ही इस मार्ग पर चल सकता है। चौरासी लाख जीव योनियों के कल्याण के लिए उन्होंने अपना जीवन खपा दिया। अपने विरोधियों को भी उन्होंने क्षमादान दिया। चण्डकौशिक को उन्होंने क्षमा कर दिया। इसीलिए महावीर भगवान कहलाये। उनके जीवन में राजप्रासाद का सुख महत्वपूर्ण नहीं था। केवल मानवता का कल्याण ही उनके जीवन का परम लक्ष्य था। भौतिक सुख–दुःख का मानव–जीवन में कोई स्थान नहीं। उसकी सम्पूर्ण चर्या आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण होती है।

जिसने संयम के मार्ग को स्वीकार कर लिया है, उसके जीवन में कठोर और मृदु संवेदनों का आना आवश्यक है। संयम के कठोर मार्ग पर चलने वाले साधक के जीवन में परीषहों का आना स्वाभाविक है, क्योंकि साधक का जीवन चारित्र की मर्यादाओं से बधा है। मर्यादाओं के पालन से मानव जीवन की सुरक्षा होती है। मर्यादाओं का पालन करते समय संयममार्ग से च्युत करने वाले कष्ट एवं संकट ही मानव की कसौटी हैं इसलिये उन कष्टों को समभाव से

सहन कर वह अपने आचार का पालन करे। साधक के लिये परीषह बाधक नहीं साधक होते हैं। मानव में जीवन यापन के दो प्रमुख आयाम होने चाहिए– अहिंसा और कष्ट सहिष्णुता। कष्ट सहने का अर्थ शरीर, इन्द्रिय और मन को पीड़ित करना नहीं, किन्तु अहिंसा आदि धर्मों की आराधना को सुस्थिर बनाये रखना है। मानव जीवन में अनेक बाधायें, प्रतिकूलतायें तथा उपसर्गादि आते ही रहते हैं, इन्हें समतापूर्वक सहना ही परीषह जय कहलाता है। कहा गया है– क्षमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात। अर्थात् बड़े लोगों का यह धर्म है कि यदि छोटे लोग किसी प्रकार का उत्पात भी करे तो उन्हें क्षमा कर दें। सहनशीलता के बिना यह संभव नहीं है। अतः सहनशीलता मानव का सर्वोत्तम गुण है। जिस व्यक्ति में सहनशीलता नहीं रहती, जो व्यक्ति अहंकारी होता है उसका विनाश बहुत शीघ्र हो जाता है। प्रकृति भी सहनशीलता का उदाहरण प्रस्तुत करती है।